डिजिटल केबल से भारत सुनहरे भविष्य की ओर

भारत अब एशिया का प्रमुख केबल बाजार बनने की दहलीज पर है। 1992 में जब से सरकार ने निजी केबल उद्योग कंपनियों के लिए दरवाजे खोले थे, तब से केबल सेवा उद्योग को भारत में एक लम्बा वक्त गुजर चुका है। भारतीय अर्थवयवस्था के पिछले दशक में तेजी से विकास करने के साथ भारतीय केबल सेवा उद्योग भी एक तेज गति की आकर्षक संभावनाओं वाले क्षेत्र के रूप में उभरा है। विशेषज्ञों का अनुमान है कि एशिया प्रशांत क्षेत्र में चीन के बाद भारत दूसरा सबसे बडा डिजिटल केबल टीवी होम मार्केट बनने की ओर तेजी से बढ रहा है। केबल उद्योग की कामयाबी की कहानी में सबसे प्रमुख योगदान उस उत्सुकता का है जो नयी तकनीकियों को अपनाने में निजी केबल कंपनियां दिखाती हैं। 90 के दशक के शुरुआती दौर में, उदारवाद का दौर शुरू होने के साथ ही केबल कंपनियों ने नयी नयी तकनीकियों को अपनाया, ताकि टेलीविजन देखने के शौकीन भारतीय परिवारों की बढती मांगों को पूरा किया जा सके। हमने देखा है कि इस दौरान चैनलों की तादाद में भारती इजाफा हुआ है। सामान्य एनॉलॉग सिग्नल केवल 99 चैनलों को ही दिखा सकते थे। केबल प्लेटफार्म का डिजिटलीकरण ही इसका सही समाधान था, जिसे अपनाने में केब्ल कंपनियों ने काफी रूचि दिखलाई। सर्वश्रेष्ठ ऑडियो विडियो खासियतों के साथ डिजिटल केबल के जरिये 999 तक चैनल दिखाये जा सकते हैं, जो अपने आप में किसी भी टेलीविजन दर्शक के लिए बेहद रोमांचकारी बात है। वर्षों के विलम्ब और गतिरोधों के बाद, अब डिजिटल केबल ने भारतीय महाद्वीप में अपनी सशक्त मौजूदगी दर्ज कराई है। डिजिटल केबल अब निरंतर अपनी जडो को मजबत करता जा रहा है और यह भारतीय घरों के एक आवश्यक अंग के रूप में अपनी स्थिति कायम कर रहा है। घरेलू टेलीविजन बाजार, डिजिटल प्लेटफार्म की ओर मुड गया है। अनुमान है कि वर्ष 2010 तक टेलीविजन वाले 10 करोए घरों में से 28 फीसदी लोग नये प्लेटफार्मो पर पहुंच चुके होंगें और भुगतान आधारित सेवाएं ले रहे होंगे। ये नये प्लेटफार्म हैं: डिजिटल केबल, डीटीएच (डायरेक्ट टू होम) और आईपीटीवी (इंटरनेट प्रोटोकॉल टीवी)। नयी और समुन्नत तकनीकों की बढती भूमिका तथा हमारी विकसित होती अर्थव्यवस्था, ये दोनों मिलकर भारत में केबल टेलीविजन उद्योग के आगे विकास में महत्वपूर्ण आधार साबित होंगी। वर्तमान में देश में 13 करोड घरों में टेलीविजन हैं। इनमें से 7.1 करोड घरों में केबल सुविधा है। लेकिन केवल 6 फीसदी घर ही अभी डिजिटल केबल की सुविधा का उपभोग कर हे हैं, इसलिए इसमें संभावनाएं बेशुमार हैं। बहरहाल, डिजिटल टेलीविजन और ब्रॉडबैंड सुविधा को भारत में अपनाने की रफ्तार काफी कम है। इसकी वजहें हैं निवेश की कमी, नियामकों के अवरोध और अंतिम सिरे का विखंकडित होना। लेकिन इसका भविष्य हमारे सामने एक आशाजनक तस्वीर रखता है। अनुमान इंगित करते हैं कि इस क्षेत्र में कुल डिजिटल ग्राहकों की तादाद वर्ष 2012 तक बढकर 15.2 करोड हो जायेगी। यह तादाद वर्ष 2017 तक बढकर 20.9 करोड हो जाने की उम्मीद है। इसका मतलब यह है कि क्षेत्र के लगभग 60 फीसदी केबल सुविधा वाले घरों में वर्ष 2017 तक कम से कम एक सेट-टॉप-बॉक्स अवश्य होगा। दुनिया के विकसित बाजारों में डिजिटल केबल के बाजार की बढत ज्यादा है क्योंकि वहाँ डाइरेक्ट टूइ होम सेवाओं पर इसे वरीयता दी जाती है। पिछले कुछ सालों में अमेरिका में केबल का बाजार बढकर बाजार के 70 फीसदी हिस्से पर छा चुका है और अभी भी बढ रहा है। यूरोपीय बाजारों में डायरेक्ट टू होम सेवाओं के मुकाबले डिजिटल केबल का बाजार करीब-करीब दुगुना है। अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर डिजिटल केबल बाजार की बेहद मजबूत साख है। इस साख का कारण हैं सेवा की गुणवत्ता और श्रेष्ठता, चैनलों की भारी तादाद और बेहतरीन चित्रों के साथ लाजवाब आवाज वाला प्रदर्शन। इस श्रेत्र मे नियामक संस्थाओं जैसे कि टेलीकॉम अथॉरिटी ऑफ इंडिया (ट्राई) ने तो अनुकूल रवैया अपना करके रौनक बढाई ही है साथ ही केबल नेटवर्कों ने भी कम प्रयास नहीं किये हैं। भविष्य की मॉग पर खरे उतरने के लिए इनकी तरफ से भी पूरी तैयारी है। ब्रॉडबैंड के लिए उपयुक्त दोतरफा पथ की पेशकश और ट्रिपल प्ले जिसमें वीडियो ऑन डिमोंड तथा केबल टेलीफोनी जैसी कई अन्य सुविधाएं भी शामिल हैं। इसमें कोई शक नहीं है कि एक अच्छा केबल नेटवर्क जो बेहतरीन तथा उपयोगी सुविधाएं उपलब्ध करा सकता है, वैसी सुविधाओं को एक डी टी एच ऑपरेटर कतई नहीं दे सकता।

अपनी गुणवत्ता में डिजिटल केबल क्यों खरा है

तकनीकी और व्यावसायिक मानकों पर इसकी खासियतें डीटीएच से बेहतर हैं।

डीटीएच सेवाओं के मुकाबले डिजिटल केबल अधिक गुणवत्ता वाले चित्रों और आवाज को प्रस्तुत करता है तथा मूल्यवर्धित सेवाओं को भी। दो तरफा संचार जैसे कि भुगतान के अनुसार प्रोग्रामिंग, विडियो ऑन डिमांड आदि भी डिजिटल केबल के जरिए संभव है। डीटीएच मे चैनलों की तादाद बहुत थोडी होती है। इसकी तुलना में डिजिटल केबल 1000 तक चैनल दिखा सकता है। वर्तमान में, ज्यादातर डीटीएच कंपनियां लगभग 200 चैनलों को पेशकश करती हैं। हालॉकि तकनीकी रूप से देखा जाये तो डीटीएच के जरिये इससे ज्यादा चैनल भी दिखाए जा सकते हैं। लेकिन अतिरिक्त चैनलों को जोडने की लागत कारोबारी तौर पर सीमित रखने के चलते चैनलों की तादाद को ही घटा दिया जाता है। डिजिटल केबल अधिक भरोसेमंद हैं क्योंकि बारिश, बादलों, बर्फबारी, वृक्षों या हवा के तेल झोंकों से इसके प्रदर्शन पर कोई असर नहीं पडता। केबल टीवी स्थानीय सांझेदारों के साथ स्थानीय चैनलों को भी दिखा सकते हैं यह सुविधा अभी डीओएच कंपनयों द्वारा नहीं दी जा रही हैं। कम लागत, किसी गडबडी के दौरान मुफ्त में घर पर आकर जॉच करना आदि सुविधाएं डीटीएच में मुमकिन नहीं। इनमें किसी की तकनीकी मसले को सुलझाने के लिए सर्विस इंजीनियर को बुलाना पडता है जिसे भुगतान करना होता है। डिजिटल केबल उपभक्ताओं के लिए अधिक अनुकूल है। यह डीटीएच जैसे दूसरे डिजिटल प्लेटफार्मों की तुलना में अधिक सरल है। परिवार के ऐसे लोग जो तकनीकी विशेषज्ञ नहीं होते जैसे कि गृहणियां और बुजुर्ग लोग, ये लोग डिजिटल केबल सेवाओं को वरीयता देते हैं क्योंकि इस सेवा का इस्तेमाल इनको आसान लगता है। किसी भी तकनीकी गडबडी के उत्पन्न होने पर स्थानीय केबल ऑपरेटर द्वारा मित्रवत- सहयोग सहज ही उपलब्ध हो जाता है, कॉल सैंटरों की मशीनी आवाजों से वास्ता नहीं पडता। घरों में डिजिटल केबल को लगाना बहुत आसान है और यह जल्दी हो जाता है। इसमें कोई डिश एंटिना जरूरी नहीं होता, इसलिजए डिजिटल केबल कनेक्शन के लिए हाउसिंग सोसाइटी से अनुमति लेने की जरूरत नहीं पडती। डीटीएच सुविधा लेने पर नये ग्राहक को भारीभरकम एंटिना लगाने के लिए समुचित अनुमति प्राप्त करने की बोरियत भरी थकाऊ प्रक्रिया से गुजरना पडता है। भारत जैसे देशों में वाजिब कीमतों का मसला हमेशा सबसे आगे रहता है। सैटेलाइट और डिजिटल केबल टीवी के बीच इस मसले पर फैसला हो जाता है। केबल सुविधाओं की कम लागतें यह निश्चित करती हे कि भविष्य में भी वाजिब कीमतों को तरजीह देने वाले उपभोक्तागण केबल सुविधाओं के साथ ही जुडे रहेंगें। सैटेलाइट और केबल दोनों सुविधाओं को प्रदान करने वाले अपना-अपना बाजार हिस्सा बढाने के लिए लगातार गलाकाट प्रतिस्पर्धा में जुटे हैं। इसके लिए दोनों की ओर से आक्रामक मार्केटिंग अभियान चलाए जा रहे हैं। धीमें-धीमें मजबूती हासिल करने वाला डिजिटल केबल का बाजार जिसे पहले निषेधात्मक नियामकों द्वारा प्रतिबंधित किया जा रहा अब इसने लोकप्रियता में डीटीएच पर बढत हासलि कर ली हैं क्योंकि डिजिटल केबल टीवी सुविधा की कीमतें हमेशा ही डीटीएच से कमतर रही हैं और रहेंगी। डीटीएच और डिजिटल केबल के बीच की इस प्रतियोगिता ने भारत के 9000 करोड रूपए के टेलीविजन उद्योग के नएे चरण के विकास के लिए जमीन तैयार कर दी है। उपभोक्ताओं की पसंद बढ रही है और मीडिया महारथियों के लिए कार्यक्रमों के समुचित वितरण का मूल्यवान विस्तार किया जा रहा है। नीति निर्माताओं द्वारा पारित किए गए नये नियमों के कारण नये ऑपरेटरों का प्रवेश आसान हो गया है। केबल नेटवर्कों का डिजिटलीकरण किए जाने, विदेशी पूंजी और निजी पूंजी का निवेश बढने की राह बन गयी है। साथ ही पेशेवर केबल टीवी कंपनयों की तादाद में भी बढोतरी होगी। इस तरह से भारतीय डिजिटल टेलीविजन उद्योग तेज रफ्तार से आगे बढेगा। उपलब्धता में बढोतरी होने के साथ टेलीविजन सेटों के दाम गिरें हैं। डिजिटल केबल टीवी के जरिये अर्ध शहरी और ग्रामीण क्षेत्रों में स्थानीय भाषा के चैनलों की पहुंच बढती जा रहीं है। इसके अलावा कुछ अन्य बेहतरीन खासियतों भरी पेशकश भी की जाती है जैसे कि इलेक्ट्रानिक प्रोग्राम गाइड, चैनल लॉक, पॉपअप रिमांडर्स, इंटरएक्टिव गेम, रेडिया की उपलब्धता, मूवी ऑन डिमाड तथा और भी बहुत सी सुविधाएं आ रही हैं और आने को हैं। इनमें भारत में डिजिटल केबल टीवी उद्योग के विकास की रफ्तार तेज गति पकडेगी। छोटे क्षेत्रों के लिए नये नये चैनल आ हैं जिनका जोर स्थानीय मुद्दों पर होगा। इस बाजार का आकार कई स्तरों पर बढने वालस है। ग्राहकों की तादादा में तो बढोतरी होनी ही है, साथ ही पैसे की पूरी वसूली दिलाने के लिए सेवाओं में भी लगातार सुधार होगा। अमेरिका, यूके, यूरोप, सिंगापुर, और हांग कांग के विकसित बाजारों में डिजिटल केबल टीवी का हिस्सा 70 प्रतिशत से भी अधिक है। जैसे-जैसे विकासशील बाजार विकसित बाजारों के रूप में परिपक्व होते जाएंगें वैसे-वैसे ग्राहकों का झुकाव अपने आप डिजिटल केबल टीवी की ओर बढता जाएगा। वजह यह है कि इसकी सेवा की गुणवत्ता, वाजिब कीमतों और निरंतर सुविधा जैसी खासियतों के सामने इसके प्रतियोगी कहीं नहीं ठहरते। विकसित बाजारों के केबल कंपनियां अपने नटवर्क में बखूबी सुधार कर चुकी हैं और डिजिटल, इंटरएक्टिव, ब्रॉडबैंड और टेलीफोनी सुविधाओं को उपलब्ध कराती हैं। अमेरिका, यूके और स्कैंडिनेविया में पहले से ही केबल टेलीफोनी सुविधा सफलतापूर्वक चल रही है। इन देशो में डीटीएच कंपनयों को मात देने के लिए केबल कंपनियों द्वारा इस सुविधा को एक प्रमुख रणनीति के रूप में प्रयोग किया जाता है। निजी कंपनियों के लिए नये पहलू खुलते जाने के साथ भारत में पहुंच बढाने की जंग की शुरूआत होने वाली है। बहुत कम बडी कंपनियों के साथ भारत में केबल आपरेटरों द्वारा नये-नये विकल्पों की दी जा रही सुविधाएं अभी आरंभिक दौर में हैं लेकिन ये लगातार जागरूक होते भारतीय उपभोक्ता के मध्य जल्दी ही अपनी पहचान कायम करेंगी।

-श्री बाला मलाडी

सीईओ एट्रिया कन्वर्जेंस टेक्नॉलॉजीज